Godda college, Godda

Name of the teacher	Course	Sem	Subject	Title	Mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	T.C-204	Rating scales, Types of Rating scale,	Pdf

P.Kumar
22/04/2020

Rating scale (रेटिंग मापनी)/ निर्धारण मापनी

मानवीय निर्णय पर आधारित मापन विधियों में अत्यधिक प्रयोग में आने वाली निर्धारण मापनियाँ है। यद्यपि ये व्यवहारिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक लोकप्रिय है फिर भी इनका विभिन्न क्षेत्रों के शोधों में व्यापकता से प्रयोग किया जाता है।

सर्वप्रथम निर्धारण मापनी का प्रयोग गाल्टन (Galton) 1883 ने किया। इनका प्रयोग व्यक्तियों के मूल्यांकन में, उनकी प्रतिक्रियाओं में तथा उत्तेजनाओं के मूल्यांकन में किया जाता है। मनोभौतिकी (Psychophysics) में इस विधि का श्रेय फेक्नर (Fechner) को है।

निर्धारण मापनी एक ऐसा शोध उपकरण है जिसके माध्यम से प्रेक्षक (observer) या रेटर (rater) किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना को एक दिए गए कोटिमापनी (category scale) के रूप में मापता है।

उदाहरणार्थ- जब शिक्षक छात्रों में शब्दभण्डार को अत्यधिक ऊँचा, साधारण, कम, के कोटि मापनी के रूप में मापते है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा इसे अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया गया है:-

गुड तथा स्केट (Good & Skate) के अनुसार -

" निर्धारण मापनियाँ मूल्यांकन की जाने वाली वस्तु के विभिन्न खंडों की ओर ध्यान आकर्षित

Scanned with CamScanner

करती है लेकिन इसमें इतने प्रश्न अथवा वर्ग नहीं होते जितने जाँच सूची या प्राप्तांक कार्ड में होते हैं।"

वान डैलेन (Von Dalen) के अनुसार - "निर्धारण मापनी किसी चर की मात्रा, तीव्रता तथा बाहुल्यता को निश्चित करती है।"

निर्धारण मापनियों के प्रकार (Types of Rating Scales)

निर्धारण मापनियों के मापन विधियों का विकास अनेक प्रकार से हुआ है। मुख्य रूप से निर्धारण मापनियों को निम्नांकित छः भागों में विभक्त किया जा सकता है :-

(i) आंकिक निर्धारण मापनियाँ (Numerical Rating Scales)

(ii) आकृतिक / आलेखीय निर्धारण मापनियाँ (Graphic Rating Scales)

(iii) प्रतिशत निर्धारण मापनियाँ (Percentage Rating Scales)

(iv) मानक निर्धारण मापनियाँ (Standarded Rating Scales)

(v) संचयी बिन्दुओं द्वारा निर्धारण (Rating by Cumulative Points)

(vi) बाध्यित चयन निर्धारण मापनियाँ (Forced-Choice Rating Scale)

इन सभी प्रकार के मापनियों का वर्णन इस प्रकार है:-

(i) आंकिक निर्धारण मापनियाँ (Numerical Rating Scales) -

आंकिक निर्धारण मापनियों को एकाकीकृत तथा विशेष वर्ग की मापनियों के नाम से जाना जाता है।

Scanned with CamScanner

वैसे आपकी विषयें प्रेक्षक को निश्चित अंको का एक क्रम दिया जाता है जो अच्छी तरह से परिभाषित होते है तथा प्रेक्षक वस्तुओं को अपने सामान्य अनुभव के आधार पर परिभाषाओं के अनुसार अंक प्रदान करते है। इस तरह के मापकियों में तीन, पाँच, सात, नौ तथा ग्यारह के पैमानो पर निर्धारित हुए निश्चित संख्या के ऊपर कोई का चयन कराया जाता है। उदाहरणस्वरूप -

अंकित चिह्न Numerical anchor	अर्थ / परिभाषा Meaning / definition
1.	अत्यधिक असहमत (Extremely disagree)
2	जोरदार असहमत (Strongly disagree)
3	साधारण असहमत (Moderately disagree)
4	हल्का असहमत (Mildly disagree)
5	तटस्थ (Neutral)
6	हल्का सहमत (Mildly agree)
7	साधारण सहमत (Moderately agree)
8	जोरदार सहमत (Strongly agree)
9	अत्यधिक सहमत (Extremely agree)

Scanned with CamScanner

कुछ आंकिक मापनी ऐसे होते हैं जिनमें निर्धारण के लिए कोई अंक नहीं दिये जाते हैं। प्रेक्षक केवल दिए गए विकल्पों या परिभाषाओं के सन्दर्भ में निर्धारण करता है तथा बाद में उसे अंक प्रदान करता है। उदाहरणस्वरूप - विभिन्न भारों का निर्धारण -

बहुत भारी (Extremely heavy)
भारी (Heavy)
सामान्य (Normal)
हल्का (Light)
बहुत हल्का (Extremely light)

फोर जब वस्तुओं को निर्धारण उक्त मापनी में करता है तो शोधकर्ता बाद में उन्हें अंक जैसे 5, 4, 3, 2, 1 (यदि बहुत भारी से प्रारंभ कर बहुत हल्का) तक उनका सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical analysis) करता है।

कुछ आंकिक मापनी ऐसे होते हैं जिसमें तटस्थ बिंदु (Neutral Point) के लिए 0 (शून्य) अंक दिये जाते हैं तथा धनात्मक स्केल के विभिन्न श्रेणियों के लिए धनात्मक अंक (Positive numbers) जैसे +3, +2, +1 दिये जाते हैं तथा ऋणात्मक स्केल (negative scale) के लिए ऋणात्मक अंक जैसे -3, -2, -1, दिये जाते हैं। उदाहरण स्वरूप -

Scanned with CamScanner

आंकिक चिह्न	श्रेणी या परिभाषा
+3	अत्यधिक सहमत (Extremely agree)
+2	कम सहमत (mildly agree)
+1	सहमत (Agree)
0	उदासीन (Indifferent)
-1	असहमत (Disagree)
-2	कम असहमत (mildly Disagree)
-3	अत्यधिक असहमत (Extremely Disagree)

उपरोक्त आंकिक निर्धारण मापनी के द्वारा हम कह सकते है कि इसके तीन उप प्रकार है। जिसमें प्रथम प्रकार का अत्यधिक उपयोगी एवं लाभप्रद है। क्योंकि इसमें आंकिक चिह्न एवं उसकी परिभाषा दोनों ही दिया रहता है।

आंकिक निर्धारण मापनी के मूल्यांकन के रूप में इसके लाभ इस प्रकार है। -

⇒ आंकिक निर्धारण मापनी की रचना सरल होती है।

⇒ मापनी पर प्राप्त परिणामों को प्रयोग करना भी सरल होता है।

⇒ यदि निर्धारण करने वाला व्यक्ति आंकिक निर्धारण मापनियों का प्रयोग बुद्धिमत्तापूर्वक करता है तो परिणाम स्वयं में संतोषजनक ही समझा है।

आंकिक निर्धारण मापनी के दोष। -

⇒ इस प्रकार के मापनियों में पक्षपात तथा बुद्धि के अवभाव की प्रधानता अधिक है।

⇒ भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा किए गए निर्णयों में समान एकरूपता नहीं रहती है।

Scanned with CamScanner

(ii) आकृतिक / आलेखीय निर्धारण मापनियाँ -
(Graphic rating scales)

आकृतिक निर्धारण मापनी में मापनी बिन्दु आकृति (Graph) के रूप में होते हैं और प्रत्येक मापनी बिन्दु का वर्णनात्मक संकेत (descriptive cues) दिया रहता है। मापनी बिन्दुओं (scale points) का कोई संख्यात्मक मान (numerical value) नहीं होता है। प्रेक्षक / निर्धारक को अपना विचार दिए गए वर्णनात्मक संकेत (descriptive cues) के आगे एक टिक (✓) का चिह्न लगाकर करना होता है या कोई अन्य इसी प्रकार का चिह्न लगाकर करना होता है। उदाहरणार्थ -

(a) रमेश कक्षा में पढ़ाते हैं-

अत्यधिक तेजी से	थोड़ा तेजी से	धीमी गति से	सुस्ती में	अत्यधिक धीमी गति से

(b) सामाजिक गोष्ठी में रमेश:-

अत्यधिक बातचीत करते हैं	आसानी से बातचीत कर लेते हैं	जरूरत होने पर ही बातचीत करते हैं	दूसरों के बातचीत करने से पसंद करते हैं

उपरोक्त दोनों उदाहरण आकृतिक मापनियों के हैं (a) में मापनी बिन्दुओं को सतत रेखा (continuous line) द्वारा दिखलाया गया है तथा (b) में मापनी बिन्दुओं को टूटी रेखा (broken lines) से दिखलाया गया है। दोनों में मापनी बिन्दुओं को क्षैतिज रूप से (horizontally) अर्थात् पड़ी रेखाओं द्वारा दिखलाया गया है। आलेखीय निर्धारण मापनियों को लम्बवत रूप (vertically) भी दिखाया

जाना जाता है। इसका अर्थ बालकों द्वारा किया
दैनिक व्यवहार निर्धारण मापनी (Daily Behaviour
Rating Scale) है।

क्षैतिज रूप (Horizontally) से मापनी बिन्दुओं के
के लिए बहुत थोड़ा स्थान मिलता है जबकि लम्बवत रूप
(Vertically) से मापनी बिन्दुओं के लिए अधिक स्थान
मिलता है।

आलेखीय निर्धारण मापनियों के निर्माण में ये
महत्वपूर्ण बातों का ध्यान आकर्षित करना चाहिए-

⇒ मदों के कथनों को यथार्थपरक उपस्थित
करना चाहिए। जैसे- "मैं अध्यापन कार्य से
पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हूँ।" के स्थान पर "मैं
अध्यापन से सन्तुष्ट हूँ।" अधिक उपयुक्त है।

⇒ विवरणात्मक कथनों को इस प्रकार रखना चाहिए
कि अन्तरवैयक्तिक रूप से मापनी के औसत मूल्यों के
निकट हो।

आलेखीय निर्धारण मापनियों का मूल्यांकन के
आधार पर कहा जा सकता है कि इनके लाभ निम्नवत हैं-

⇒ यह मापनी सुविधाजनक, सरल एवं रचना तथा प्रशासन
में आसान होती है।

⇒ इसमें विशेष रूप से प्रशिक्षण देने की आवश्यकता नहीं है।

⇒ निर्णायक संकेतों को आसानी से सहजता के साथ
विभेद कर सकता है।

⇒ इसमें निर्णायकों को अंकों की चिन्ता नहीं करनी
पड़ती है तथा इससे उत्पन्न होने वाले त्रुटि
अपने आप दूर हो जाता है।

Scanned with CamScanner

⇒ इस प्रकार के मापनी को शीघ्रता से बनाया जा सकता है।

⇒ इस मापनी में अंकन-विधि को इच्छानुसार परिवर्तित किया जा सकता है।

⇒ आलेखीय निर्धारण मापनियाँ द्वारा तुलनात्मक निर्णय करने की विशेष सुविधा रहती है।

⇒ इस मापनी में निर्णायक प्रणाम समूह के सभी सदस्यों से परिचित नहीं रहता है।

आलेखीय निर्धारण मापनियाँ के दोष:-

⇒ आलेखीय निर्धारण मापनियों में फलांकों की गणना में कठिनाई होती है एवं परिश्रम अधिक करना पड़ता है।

⇒ इस विधि में भी पक्षपात की सम्भावना अधिक रहती है।

(iii) प्रतिशत निर्धारण मापनी (Percentage rating scale) -

प्रतिशत रेटिंग एक तरह का अपरिपक्व रेटिंग मापनी है। इसमें प्रेक्षक पहले से तैयार किये गए विभिन्न प्रतिशत समूहों या विभिन्न शतमक (Percentile) में व्यक्तियों को रखकर रेटिंग करता है। इसका उदाहरण इस प्रकार है:-

उच्चतम 5 प्रतिशत (Highest 5 Percent)

दूसरा उच्चतम 5 प्रतिशत (Second highest 5 Percent)

उच्चतम 25 प्रतिशत ऊपर का (10 प्रतिशत cutoff)

~~ऊपर~~ ऊपर से आधा परन्तु ऊपर का 25 प्रतिशत cutoff

नीचे से आधा

(IV) मानक निर्धारण मापनियाँ (Standard Rating Scales) -

मानक निर्धारण मापनियों में निर्धारक को पहले से कुछ मानक प्राप्त होते हैं। इस मानक का मापनी इतना पहले से निर्धारित रहता है। यहाँ निर्धारक का कार्य दिए हुए व्यक्तियों या वस्तुओं का मानक से मिलते हुए निर्धारण करता है।

मानक निर्धारण मापनियों का प्रयोग मुख्य रूप से निम्न प्रकार से किया जाता है:-

(a) हस्तलेखन मापनियाँ (Handwriting Scales)-

इसमें मुख्य रूप से तीन गुण - सुपाठ्यता, गुण तथा गति मुख्य हैं जिसका मापन किया जाता है।

सुपाठ्यता के मापन को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए - अक्षर-रचना, अन्तर, लिखावट, अक्षर की ऊँचाई, विभिन्नता आदि।

गति के मापन हेतु - किसी दिए गए निश्चित समय के अन्तर्गत कौन विद्यार्थी कितना लिख लेता है, या प्रति सेकेण्ड कितने अक्षर लिखने की गति सम्बन्धित विद्यार्थी में है।

इस प्रकार, हस्तलेखन का मापन दिए गए सुपाठ्यता, आकर्षकता तथा गति के मानक विन्यास या प्रमाणित मानदण्ड के परिप्रेक्ष्य में संकेतों के आधार पर किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(b) पाँच बिन्दु मापनी (Five-point Scale):

इस मापनी का विकास सबसे प्रचलित रूप से सेवा के रूप में हुआ। इसका विकास रेंसिस लिकर्ट द्वारा किया गया था और उनके नाम का ही लैकर्ट मापनी था। पाँच शीर्षकों के आधार पर सेवा के कर्मचारियों का निष्पादन क्रमानुसार किया जाता है। जैसे - व्यावसायिक ज्ञान, बुद्धि, नेतृत्व, व्यक्तित्व गुण तथा सेवा भाव। प्रत्येक गुण के लिए पाँच श्रेणियों को स्वीकार करते हैं जिससे मध्यस्थित गुण अधिक महत्व रखते पाते हैं। उदाहरणार्थ - रोजगार की दृष्टि से गोरक्षा सुरक्षाकर्मी के पाँच आकारों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है-

आकार का नाम	अर्थ
A	सर्वश्रेष्ठ
B	श्रेष्ठ
C	सामान्य
D	कमजोर
E	बहुत कमजोर

अंकन की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ को 5, श्रेष्ठ को 4, सामान्य को 3, कमजोर को 2, तथा बहुत कमजोर को 1 अंक प्रदान किया जाता है।

मानक निर्धारण मापनियों के लाभ :-

⇒ इस मापनी में व्यक्ति के गुणों के आधार पर निर्धारण किया जाता है।

⇒ अंकों का निर्धारण व्यक्ति के गुणों के निर्धारण की अपेक्षा गौण होता है

⇒ भिन्न-भिन्न निर्णायकों द्वारा किए गए कार्यक्रमों की स्पष्ट रूप से तुलना की जा सकती है।

⇒ स्थायी कसौटी दिए रहने के कारण निर्धारक मानक को समानुसार परिवर्तित नहीं कर सकता है।

⇒ मानक निर्धारण मापनी का प्रमुख गुण इसकी सरलता है।

मानक निर्धारण मापनियों के दोष :-

⇒ निर्णायकों द्वारा किए गए निर्धारणों में व्यवहार के क्षेत्र में एकरूपता नहीं हो सकता है।

⇒ इस निर्धारण मापनी के अन्तर्गत व्यक्ति के बारे में निर्णय करते समय अधिकतम तथा न्यूनतम मूल्यांकन करने की पक्षपात की सम्भावना बनी रहती है।

⇒ इस प्रकार के मापनी के निर्माण में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती है।

⇒ इस प्रकार की मापनी में वस्तुनिष्ठता कम तथा आत्मनिष्ठता अधिक होता है। (Subjectivity)

(V) संचयी बिन्दुओं द्वारा निर्धारण (Determination by Cumulative Points) -

संचयी बिन्दुओं द्वारा मापनी एक ऐसी निर्धारण मापनी है जो काफी लोकप्रिय है तथा व्यवहार उपयोग व्यवसायपरक विज्ञानों में सर्वाधिक हुआ है। इस प्रकार की मापनी में निर्धारक व्यक्तियों को मापनी पर के सभी कथनों पर निर्धारित करता है और बाद में उन सभी वैयक्तिक निर्धारण का एक योग प्राप्त करता है। यह योग ही प्रत्येक व्यक्ति का मापनी पर का कुल प्राप्तांक होते हैं जिनका विश्लेषण कर निर्धारक एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। इस मापनी के विभिन्न बिन्दु भारित (weighted) भी हो सकते हैं या अभारित (non weighted) भी हो सकते हैं।

संचित बिन्दुओं पर आधारित रेटिंग मापनी के मुख्य दो प्रकार हैं:-

(a) जाँच सूची विधि (Check List Method)

(b) अनुमान खोज प्रविधि (Guess-who Technique)

(a) जाँच सूची विधि (Check-list Method) - इस विधि का प्रयोग हार्टशर्न तथा मे (Hartshorne & May) द्वारा बच्चों के चरित्र का मूल्यांकन करने के लिए किया गया। इस विधि में निर्धारक को 300 वाक्यों या विशेषणों (Adjectives) की एक सूची प्रदान की जाती है जो

उद्दीपन के रूप में कार्य करते हैं। निर्णायक को उन विशेषणों या गुणों के आधार पर व्यक्तियों का निर्णय करना होता है। उदाहरणार्थ -

रीमा एक ऐसी लड़की है जो -

- धनी - मानी (smart)
- बुद्धिमान (intelligent)
- सुन्दर (beautiful) है।

निर्णायक को दिए गए तीन विशेषणों की एक सूची पर आँकते हुए अपना निर्णय करता है। सामान्यतः प्रत्येक धनात्मक निर्णय के लिए +1 तथा प्रत्येक ऋणात्मक निर्णय के लिए -1 का प्राप्तांक दिया जाता है। किसी एक व्यक्ति को सभी एकांशों पर मिलने वाले प्राप्तांकों का योग ही कुल प्राप्तांक कहलाता है।

जॉच सूची विधि की उपयोगिताएँ -

⇒ इसकी रचना तथा फलांकन (scoring) सरल होती है।

⇒ इसकी वैधता भी सरल होती है।

⇒ अप्रशिक्षित तथा विषेशीकारी ज्ञान न रखने वाला निर्णायक भी अपना निर्णय आसानी से कर सकता है।

⇒ यह एक निष्पत्ति परीक्षण के रूप में भी कार्य करती है।

जॉच सूची विधि की परिसीमाएँ। -

⇒ दो या तीन प्रतिक्रियाओं के होने पर अंकन-विधि में वैज्ञानिकता नहीं आ सकती है क्योंकि अनुकूल प्रतिक्रिया का स्थान तटस्थ प्रतिक्रिया से अधिक होना चाहिए।

⇒ बहुत सी सूचियों में से निर्णय करने पर पक्षपात की संभावना बढ़ जाती है।

Scanned with CamScanner

(ii) बाइनरी चॉइस रेटिंग स्केल (Binary Choice Rating Scale) – इस स्केल में उत्तरदाता को दो विकल्पों में से किसी एक का चयन करना होता है। यह विकल्प आमतौर पर 'हाँ' या 'नहीं', 'सही' या 'गलत' जैसे होते हैं। इस स्केल का उपयोग उन स्थितियों में किया जाता है जहाँ उत्तरदाता से केवल एक निश्चित प्रतिक्रिया की अपेक्षा की जाती है। उदाहरण के लिए, क्या आप धूम्रपान करते हैं? (हाँ/नहीं) या क्या आप इस उत्पाद को खरीदना चाहेंगे? (हाँ/नहीं)। यह स्केल सरल और तेज है, लेकिन यह उत्तरदाता की भावनाओं या विचारों की गहराई को नहीं मापता है।

(iii) रैंकिंग स्केल (Ranking Scale) – इस स्केल में उत्तरदाता को कई विकल्पों को उनकी प्राथमिकता के आधार पर क्रमबद्ध करने के लिए कहा जाता है। उदाहरण के लिए, आप किन चार मोबाइल फोन ब्रांडों को सबसे अच्छा मानते हैं, उन्हें क्रमबद्ध करें। यह स्केल उत्तरदाताओं की प्राथमिकताओं को समझने में मदद करता है।

(iv) लिकर्ट स्केल (Likert Scale) – यह स्केल उत्तरदाताओं से किसी कथन के साथ उनके स्तर को मापने के लिए उपयोग किया जाता है। आमतौर पर इसमें 5 या 7 बिंदु होते हैं, जैसे: पूर्ण रूप से सहमत, सहमत, तटस्थ, असहमत, पूर्ण रूप से असहमत। यह स्केल उत्तरदाताओं की भावनाओं और विचारों को मापने में प्रभावी है।

(v) सिमेंटिक डिफरेंशियल स्केल (Semantic Differential Scale) – यह स्केल उत्तरदाताओं से किसी अवधारणा के बारे में उनकी धारणा को मापने के लिए विपरीत शब्दों के जोड़े का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, आप इस उत्पाद को कैसे देखते हैं? अच्छा/बुरा, महंगा/सस्ता, आसान/कठिन। यह स्केल उत्तरदाताओं की भावनाओं और दृष्टिकोण को समझने में मदद करता है।

दो से अधिक गुणों का एक सेट होता है जिनसे से किसी एक को पुनः निर्धारण करना होता है। किसी एक एकांश के भीतर आने वाले सभी गुण समान रूप से अनुकूल या सभी अथवा समान रूप से प्रतिकूल दिखते हैं जिनसे से निर्धारक को किसी एक को, जो उनके विचार प्रेषण किए जाने वाले व्यक्ति के लिए सही होता है, चुनने के लिए बाध्य किया जाता है। वांछित चयन निर्धारण मापनी के एकांशों में विकल्पों की संख्या दो, तीन, चार आदि हो सकता है।

जैसे -

(a) सीमा

(a) वर्ग में विश्वास के साथ पढ़ाती है।

(b) छात्रों को वर्ग में प्रेरित एवं उत्तेजित रखती है।

(c) वह मन्द बुद्धि के छात्रों का विशेष ख्याल रखती है।

(d) पढ़ाई के स्तर को ऊँचा करने के ख्याल से छात्रों के विचार जानने की कोशिश करती है।

चारों वैकल्पिक वांछित गुणों के अन्तर्गत हैं। परन्तु इनका विभेदक भार एक समान नहीं है। इसमें कथन (c) का विभेदक भार सबसे अधिक तथा कथन (a) का विभेदक भार सबसे कम है। अतः कथन (a) के लिए 1 अंक (0) तथा कथन (c) के लिए 2 अंक प्रदान किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

बाधित-चयन निर्णयन मापनी के गुण -

⇒ बाधित-चयन मापनी में एकांश विकल्पी समान रूप से अनुकूल या प्रतिकूल होते हैं इसलिए निर्णायक द्वारा इसमें निर्णयन के दौरान किसी विशेष व्यक्ति के प्रति दिखाई जाने वाली उदासीनता अपने आप कम हो जाती है।

⇒ बाधित चयन निर्णायक मापनी में परिवेश प्रभाव (halo effect) भी नियंत्रित हो जाता है, क्योंकि इस मापनी के सभी विकल्प निर्णायक को समान रूप से अनुकूल या प्रतिकूल दिखते हैं जिनमें से किसी एक ऐसे विकल्प को चुनना जो अधिक गहराई में अपनी मनोवृत्ति से अनुकूलता या प्रतिकूलता दिखाता सही संभव नहीं है।

बाधित-चयन निर्णयन मापनी के दोष -

⇒ बाधित-चयन निर्णयन मापनी की रचना में बहुत कठिनाई होती है। फलतः प्रशिक्षित व्यक्ति ही अधिक समय लेकर ऐसे पदों का निर्माण कर सकते हैं।

⇒ बाधित चयन निर्णयन मापनी में निर्णायक की एक सीमित स्वतंत्रता होती है क्योंकि निर्णायक पर कई तरह से प्रतिबंध होते हैं।

⇒ सीमित पदों में से जो समान रूप से एक दूसरे के प्रतिकूल या अनुकूल होते हैं किसी एक को चुनने के लिए निर्णायक को बाध्य किया जाता है।

⇒ कभी-कभी निर्णायक के सामने सभी विकल्प ऐसे होते हैं जिनके द्वारा उसकी सही व्याख्या नहीं कर हो सकती है। परन्तु फिर भी उसे उन विकल्पों में से किसी एक को चुनने के लिए बाध्य किया जाता है।

Scanned with CamScanner